पारिस्थितिक स्वच्छता और समाज

"परिस्थिति को स्वच्छ रखिए"

यह शब्द तो आप सबी ने सुने होंगे लेकिन किसीने बी यह सोचा है कि ऐसा क्यों कहा गया है। परिस्तिथि एक ऐसी घटक है जो एक व्यक्ति के जीवन में पहचान बनाता है। जिस परिस्थिति में वह व्यक्ति पला बढा है वही उसका पहचान का निर्णय लेता है।

उपक्रम

क्या पारिस्थितिक स्वच्छता का खयाल रखना आजके ज़माने में अनिवार्य है य नही? बिलकुल अनिवार्य है क्योंकि हम अपने परिस्थिति को अच्छे से नहीं देखें या खयाल रखें तो उसके संतुलन ही हिल

जाएगा और इसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे जनता के भविष्य पर ही पड़ेगा, यह एक कड़वा सत्य है।

"आज रको खयाल, कल को
बनाओ खुश"

कारण / प्रभाव

1. परिस्थिति और समाज
2. पारिस्थितिक स्वच्छता मनुष्य का जीवन
3. पारिस्थितिक स्वच्छता बनाए रखने के लिए हमें क्या-क्या खदम उठाने चाहिए?
4. पारिस्थितिक स्वच्छता और सरकार

1. परिस्थिति और समाज

जैसे मैंने पहले कहाँ था कि परिस्थिति हमारे भविष्य की चुनौती है और उसका खयाल रखना अनिवार्य है।

परिस्थिति और समाज एक दूसरों से जुडे हुए। जैसे धूस और मोणे जुडे हुए हैं वैसे ही समाज और परि- स्थिति के बीच गहरा बंदन है। समाज में मनुष्यों को रोगविमुक्त और संतुष्ठ जीवन बिताना है तो पारिस्तिक स्वच्छता का खयाल रखना ज़रूरी हैं।

आज हम २०२५ में आ चुके हैं लेकिन आज भी हमारे समाज को यह ज्ञान नही प्राप्त हुआ कि परिस्थिति हमारे जीवन के एक-एक पल का निर्णय लेता हैं। यह समझाना जरूरी है, क्योंकि अब नहीं समझे तो यह समझने के लिए कल मनुष्य ही नही होगें। प्रकृति का एक भाग ही है परिस्थिति, जैसे हम अपने प्रकृति माँ समझकर उसके संरक्षण के लिए खदम उठा रहे हैं वह सबी खदम अपने परिस्थिति को बी बढावा दे रहा हैं।

"प्रकृति भी माँ है,
परिस्थिति भी"

2. पारिस्थितिक स्वच्छता और मनुष्य का जीवन

इस निबंध के शुरुआत में मैं यह सूचना दिया था कि जिस परिस्थिति में एक आदमी पला बढता है वहीं उस आदमी के पहचान का निर्णय लेता है।

उदाहरण में एक आदमी स्वच्छ और अच्छी परिस्थिति में बढता है उसके मन में एक जीवन की और एक अच्छी नजर बनेगा, जीवन में वह आगे बढेगा। इन सभी से मेरा यह तात्पर्य है कि अगर बच्चपन से ही बच्चों के मन में यह बोलकर समझाना चाहिए कि पारिस्थितिक स्वच्छता अपने जीवन में बनाए रखने चाहिए। इससे परिस्थिति स्वच्छ रहेगी और उनके जीवन में भी वह तरक्की पा सकते हैं।

"परिस्थिति को रखो
स्वच्छ और जीवन पाओ
तरक्की"

कि और उदाहरण का विवरण में देना चाहूँगी कि भारत में कई जगहों पर हम छोटी - छोटी बंदी जगहों को देख सकते हैं, यह परिस्थिति को उसके बूरी राह को दिखा रही हैं। इन जगहों पर परिस्थिति बहुत बुरी है और यह मनुष्य के जीवन को बड़ी तौर पर असर डाल रहा है जैसे कई तरों के बीमारीयाँ, आने वाली में पोषण की कमी इत्यादी।

ऐसे बंदी परिस्थिति पर जीने से कई तरों की बीमारियाँ फैलती है जैसे डेंगु, मलेरिया इत्यादी। यह आने वाले पीढी के बच्चों पर भी असर पढता है।

"परिस्थिति बन गई कल की चुनौती"

मुंबई जैसे शहरों में ज्यादातर ऐसी परिस्तिथि देखने को मिलती हैं। उत्तर भारत में ऐसे भी एक जगह है वहाँ एक बडा चट्टान ही बन गया है कूडों के कारण और यह इसकी प्रभाव उस जगह

के पास रहने वाले लोगों पर ही असर पड रहा है गंदी दर्गंद से भरा पानी। ऐसे जगहों पर विसर्जन का कोई रास्ता नहीं है। हम यह सोच भी नहीं सकते कि ऐसी जगह हमारी भारत में है ही है। सरकार ने २०२५ दिसंबर को इसे साफ करने का वादा किया ता लेकिन वह दिन भी बीत गया पर कोई कार्य हम देख नहीं सके।

हमारे भारत समाज में पारिस्थितिक स्वच्छता की कमी हम इस घटना से देख सकते हैं और हमारे भारत सरकार के अंधेपन का भी उत्तम उदाहरण है यह घटना।

"परिस्थिति ही सब कुछ है"

ये सब तो हम सबी ने सुने होंगे लेकिन यह पढने के बाद कितने व्यक्तियों ने इसको अपने जीवन में सही तरह से उपयोग किया है? सिर्फ दो या तीन लोग ही इसके उत्तम अर्थ समझकर आगे बढते है और स्वच्छ पारिस्थिति बनाते हैं।

"परिस्थिति का ख्याल रखें और
भारत को उन्नति दिखाएँ"

3. पारिस्थितिक स्वच्छता को बनाए रखने के लिए हमें क्या-क्या खदम उठाने चाहिए...

इतनी देर हमने पारिस्थितिक स्वच्छता के हमारे समाज में कितनी ज़रूरी है इसके बारें में हमने चर्चा किए लेकिन हमें इसकी बी जानकारी कि ज़रूरत है कि स्वच्छता को हाज़िल करने के लिए हमारे तरफ से क्या-क्या खदम उठाना ज़रूरी है एक भारतीय नागरीक होने के नाते।

पहले मैं यह सूचित करना चाहूँगी कि एक भारतीय होने के नाते हमारे देश को अच्छी तरह से आगे ले जाना हम प्रजा का कर्तव्य है और ये हमें निभाना चाहिए। हमारे भारत जनसंख्या और गरीबी में कितने आगे है उतना ही यह स्वच्छता की बात आने पर कुछ पीछे

रह गया है। इस स्थान से भारत को स्वच्छता के बात में आगे लाना हमारा कर्तव्य है।

"मनाईए ड्रै डे"

पारिस्थितिक स्वच्छता को हाज़िल करने के लिए हम हर हफ्ते ड्रै डे मना सकते हैं और प्लास्टीक जैसे चीज़ों को उपयोग हम कम कर सकते हैं। हम सबी को पता प्लास्टीक एक ऐसी चीज़ है जो हमारे समाज में अच्छे की तौर पर आकर हमारे चहरे पर बढा तप्पट मारकर आगे जा रहा है। प्लास्टीक के कमी उपयोग से ही हम एक हद तक स्वच्छता हाज़िल कर सकते हैं।

दूसरा, कूडे अलग-अलग करके डिस्पोस करना। इससे हम जैव कूडे अलग करके डिस्पोस कर सकते हैं।

"स्वच्छता बनाए रखने के लिए
अपने हाथ भी बढाइए"

4. पारिस्थितिक स्वच्छता और सरकार

हमारे भारत समाज ने स्वच्छता हाजिल करने के लिए कई कार्य किए है। सरकार ने कई तरह के कदम उठाए है। उनमें प्रधान है हमारे प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के शब्द उन्होंने कहा है कि 2047 में हमारे देश के हर एक समाज स्वच्छता हाजिल करेगा और हमारे देश के कोने-कोने साफ हो जाएगा लेकिन आजतक वह हाजिल नही हो पाया है पर हमारे सरकार मेहनत कर रहे है जैसे आप सभी ने सुना है कि :

"यु ही बैठे रहने से नैया पार नही
होती मेहनत करनेवालों की कभी
हार नहीं होती"

हमारे सरकार के उन्ही मेहनत के फलस्वरूप भारत के सडकों में कूडेदान लगाया गया है और हर एक पंजायत में 'हरितासेना' को नियुक्त किया गया है। 'हरितसेना' वह है जो कूडे हर

से अलग - अलग करकर समेटकर उसे ठिक तरह से डिस्पोस करते हैं। इस अवज़र पर हमारे मोदी जी के एक कमाल के बारें में सूचित करना बेहद ज़रूरी है। उन्होंने सभी गाँवों में विसर्जन के सिलसिले के लिए शैचालय बनाकर दे दिए। यह सचमें सरकार से कि गई बहुत बढा सहाय है जो एक - एक गाँव को स्वच्छतापूर्वक रकने के लिए सहायता करते हैं।

"सरकार का हाथ बेहद
शक्तिशाली है"

सरकार के योजनाएँ :

1. स्वच्छ भारत अभियान

* हमारे पाठ कार्य में भी पारिस्थितिक स्वच्छता के बारें में पढाकर बच्चों तक इसकी महत्व ले जाने में सहायक बन गई हैं।

"बच्चों को भी समझाना
ज़रूरी है"

उपसंहार

पारिस्थितिक स्वच्छता हमारे जीवन में बेहद अनिवार्य और यह सिर्फ एक व्यक्ति नही कर सकता पूरे देश और समाज को एक साथ मिलकर काम करना होगा। और तभी हम इसको हासिल कर सकते है। चलो... एक साथ हमारे समाज और भारत को तरक्की पहुँचाएँ

"एक साथ मिले तो
हम कुछ भी हासिल कर
सकते हैं"

———————————